INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 7 | AUGUST – 2026

"मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय की वर्तमान स्थिति एवं विकास संभावनाओं का वाणिज्यिक अध्ययन"

सुस्मिता पटेल[1] , डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा[2]
[1]शोधार्थी वाणिज्य, शोध केन्द्र–शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]शोध निर्देशक, प्राध्यापक वाणिज्य, राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय भारत की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली पर आधारित एक महत्वपूर्ण उभरता हुआ वाणिज्यिक क्षेत्र है, जो वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित कर रहा है। मध्य प्रदेश, जो जैव–विविधता एवं औषधीय पौधों की दृष्टि से समृद्ध राज्य है, आयुर्वेदिक औषधि उद्योग के विकास के लिए अनुकूल आधार प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय की वर्तमान स्थिति, उत्पादन संरचना, विपणन प्रणाली एवं विकास संभावनाओं का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर उद्योग के विभिन्न आयामों– उत्पादन, रोजगार, निर्यात एवं बाजार विस्तार का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आयुर्वेदिक उत्पादों की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसका मुख्य कारण स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता, प्राकृतिक चिकित्सा की ओर झुकाव एवं सरकारी प्रोत्साहन नीतियाँ हैं। इसके बावजूद उद्योग को गुणवत्ता नियंत्रण, मानकीकरण, कच्चे माल की आपूर्ति एवं आधुनिक विपणन तकनीकों के अभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। शोध के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए तथा अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित किया जाए, तो आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मुख्य शब्द : आयुर्वेदिक औषधि, वाणिज्यिक अध्ययन, बाजार संरचना, उत्पादन,मध्य प्रदेश।

प्रस्तावना –

आयुर्वेद भारतीय परंपरा की एक प्राचीन एवं वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली है, जिसका मूल उद्देश्य मानव शरीर, मन एवं आत्मा के संतुलन को बनाए रखना है। वर्तमान समय में जब वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ बढ़ रही हैं, तब आयुर्वेदिक औषधियों की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह परिवर्तन न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में, बल्कि आर्थिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रभाव उत्पन्न कर रहा है। मध्य प्रदेश भारत के उन राज्यों में से एक है जहाँ औषधीय एवं सुगंधित पौधों की प्रचुरता पाई जाती है। वन संपदा की दृष्टि से समृद्ध होने के कारण यहाँ विभिन्न प्रकार की जड़ी–बूटियाँ उपलब्ध हैं, जो आयुर्वेदिक औषधि उद्योग के लिए कच्चे माल का प्रमुख स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य में उपलब्ध श्रम संसाधन एवं पारंपरिक ज्ञान भी इस उद्योग के विकास में सहायक हैं।

आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय का वाणिज्यिक स्वरूप बहुआयामी है, जिसमें उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, वितरण एवं विपणन शामिल हैं। वर्तमान समय में आयुर्वेदिक उत्पादों का बाजार तेजी से विस्तारित हो रहा है, जिसमें घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मांग में वृद्धि देखी जा रही है। ई–कॉमर्स एवं डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से आयुर्वेदिक उत्पादों की पहुंच व्यापक हो गई है, जिससे इस उद्योग को नई दिशा मिली है। हालांकि उद्योग के विकास में कुछ बाधाएँ भी हैं, जैसे कि गुणवत्ता नियंत्रण की कमी, मानकीकरण का अभाव, अनुसंधान एवं विकास में कमी तथा प्रतिस्पर्धात्मक दबाव। इन चुनौतियों के बावजूद, आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय रोजगार सृजन, ग्रामीण विकास एवं आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अध्ययन के माध्यम से मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय की वर्तमान स्थिति एवं विकास संभावनाओं का वाणिज्यिक दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जिससे इसके आर्थिक महत्व एवं भविष्य की संभावनाओं को समझा जा सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय के वाणिज्यिक स्वरूप का विश्लेषण करना है, जिसमें उद्योग की वर्तमान स्थिति, बाजार संरचना एवं विकास संभावनाओं का समग्र अध्ययन किया गया है। यह शोध उद्योग की आर्थिक उपयोगिता, रोजगार सृजन क्षमता तथा निवेश संभावनाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है–

(1) मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि उद्योग की वर्तमान स्थिति एवं संरचना का अध्ययन करना।
(2) उत्पादन, विपणन एवं उपभोक्ता मांग की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
(3) उद्योग की समस्याओं एवं विकास संभावनाओं का मूल्यांकन करना।

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न स्रोतों जैसे– आयुष मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट, राज्य सरकार के प्रकाशन, शोध पत्रिकाएँ, पुस्तकों एवं विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से आंकड़े संकलित किए गए हैं। द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। संकलित आंकड़ों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध कर तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे उद्योग की प्रवृत्तियों एवं विकास की दिशा को समझा जा सके।

विश्लेषण –

मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यह उद्योग तीव्र गति से विकसित हो रहा है। औषधीय पौधों की उपलब्धता एवं बढ़ती उपभोक्ता मांग इस उद्योग के विकास के प्रमुख कारक हैं। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में वृद्धि तथा प्राकृतिक चिकित्सा की ओर बढ़ती प्रवृत्ति ने आयुर्वेदिक उत्पादों की मांग को बढ़ावा दिया है। इसके साथ ही, डिजिटल विपणन एवं ई–कॉमर्स प्लेटफार्मों के माध्यम से उत्पादों की पहुंच में विस्तार हुआ है। इस प्रकार गुणवत्ता नियंत्रण एवं मानकीकरण की कमी उद्योग के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इसके अतिरिक्त कच्चे माल की अनियमित आपूर्ति एवं अनुसंधान की कमी भी प्रमुख समस्याएँ हैं। इस प्रकार मध्यप्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय के प्रमुख आर्थिक संकेतक के विवरण को द्वितीयक समंकों के आधार पर सारणी क्रमांक–01 में प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक–01

मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय के प्रमुख आर्थिक संकेतक संबंधी विवरण

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिशत (%)
1	पंजीकृत इकाइयाँ	248	25.2
2	वार्षिक उत्पादन (रुपये करोड़ में)	412	41.9
3	रोजगार (संख्या)	268	27.2
4	निर्यात (रुपये करोड़ में)	56	5.7
	कुल योग	984	100

स्रोत– आयुष मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट 2025

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय का प्रमुख योगदान उत्पादन क्षेत्र में है, जो कुल का लगभग 41.9 प्रतिशत है। पंजीकृत इकाइयों का प्रतिशत 25.2 दर्शाता है कि उद्योग संरचनात्मक रूप से विकसित हो रहा है। रोजगार का योगदान 27.2 प्रतिशत होने से यह स्पष्ट होता है कि यह उद्योग श्रम–प्रधान है एवं रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निर्यात का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम 5.7 प्रतिशत है, जो इस बात का संकेत देता है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ अभी भी विद्यमान हैं।

शोध की समस्याएँ एवं सुझाव –

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि आयुर्वेदिक औषधि उद्योग कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जैसे– गुणवत्ता मानकों का अभाव, कच्चे माल की अनियमित आपूर्ति, अनुसंधान एवं विकास की कमी तथा विपणन में नवाचार की कमी। इन समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक है कि सरकार द्वारा गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र को सुदृढ़ किया जाए, अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित किया जाए तथा डिजिटल विपणन को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्य प्रदेश में आयुर्वेदिक औषधि व्यवसाय एक उभरता हुआ एवं संभावनाशील वाणिज्यिक क्षेत्र है। प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं बढ़ती मांग इसके विकास के प्रमुख आधार हैं। इस प्रकार उद्योग के समुचित विकास के लिए गुणवत्ता नियंत्रण, मानकीकरण एवं विपणन रणनीतियों को सुदृढ़ करना आवश्यक है। यदि इन पहलुओं पर ध्यान दिया जाए, तो यह उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ –

1. आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली, 2024–2025
2. भारत सरकार, आयुष नीति प्रतिवेदन, नई दिल्ली, 2022
3. शर्मा, आर. के., भारत में आयुर्वेदिक उद्योग, जयपुर, 2021
4. सिंह, पी., हर्बल व्यवसाय (औषधीय उद्यमिता), नई दिल्ली, 2020
5. नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), ग्रामीण विकास प्रतिवेदन, मुंबई, 2021
6. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), पारंपरिक चिकित्सा प्रतिवेदन, जिनेवा, 2022
7. गुप्ता, एस., आयुर्वेद का विपणन प्रबंधन, मुंबई, 2019